

COTTON *Innovate*



Weekly Newsletter from Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Issue 3, Volume 8, August 2018

A weekly newsletter from ICAR-CICR

Survey and monitoring of Pink bollworm infestation on BG-II cotton hybrids in Wardha district of Maharashtra

A field visit was carried out by a team headed by Dr. V. Chinna Babu Naik, Scientist (Entomology), ICAR-CICR, Nagpur; Mr Sujit Kumbhare T-1, Mr Ashish Bopche, Dr Prashant S. Umbarkar, PC KVK, Wardha and Dr Vidya Mankar, SAO, Wardha on dated 27th July, 2018 to survey and monitor pink bollworm infestation in Wardha district (Maharashtra). In district, cotton was sown in the first and second week of June and Pink bollworm moths recorded 3 - 32 moths/trap/week when at the age of cotton crop just 45-60 days. The pink bollworm infestations of 14.29 % were observed in flowers of BG-II hybrids that were sown as pre monsoon crop. Rosetting of flowers were noticed in early sown cotton crops (55 DAS old crop) in Nizampur village of Arvi Tahshil, Wardha (Maharashtra). PBW's larvae were observed inside the rosette flowers and they were feeding within the floral parts like anthers, stigma and tender green bolls. In Bt cotton fields, the 3rd instars larvae (pink in colour) were noticed on feeding the dry anthers and entering tender green bolls. For the management of pink bollworms in flowers, farmers were spraying cocktail of different insecticides like Thiamethoxam, Emamectin benzoate and micronutrient mixture fertilizer (ZIB) at 50 days after sowing as directed by pesticides dealers. They also visited some of ginning mills in Arvi namely Rahul Cotton Fibre, Ashirwad Cotton, NM Agrawal, Prudhivivinayaka Ginning mills. All gineries have installed pheromone traps and light traps around the gineries. Some of gineries have left waste cotton seeds and lint that will be act as a source of inoculum of pink bollworms.



Meetings / TV talk

- Dr Nandini Gokte-Narkhedkar and Dr V. S. Nagrare, Principal Scientist, CICR, Nagpur attended meeting on 7th July 2018 at Kadimbag, Nagpur on preparedness for pink bollworm management in the ensuing crop season. The meeting was chaired by Shri S. P. Singh, Agriculture commissioner, Dept. of Agriculture, Govt. of Maharashtra. In the meeting, all cotton growing divisions' joint director of Agriculture/ District Superintendent Agriculture Officers (DSAO) informed the cotton area sown and arrangement of input like pheromone traps and pesticides. Dr Narkhedkar and Dr Nagrare participated in the discussion and assured help and cooperation for technical guidance. Video on Pink bollworm management was also screened by CICR scientists. Higher officials from State Agril. department, representatives from input agencies such as seed, pesticide, pheromone traps, MAIDC etc. attended the meeting.
- Dr D. Monga, Head, ICAR-CICR, Regional Station, Sirsa attended the first in house discussion with Quinquinal Review Team (QRT) Meeting at ICAR-CICR Nagpur on 21.08.2018. In this meeting, the action taken report on the recommendations of previous QRT were presented before the committee by the Director followed by discussion. The plan and program of visit of QRT members to north central and south zone was worked out.
- 'Sahyadri' Doordarshan channel telecasted show on 'Weather forecast and advisory by experts' under program Amchi Mati Amchi Manas. The show was telecasted on 13th July 2018. Dr V. S. Nagrare along with officials from state agri department and Meterological department participated.

Publication

Nagrare V.S., Naikwadi Bhausahab, Deshmukh Vrushali and Kranthi S. (2018) Biology and population growth parameters of the cotton mealybug, Phenacoccus solenopsis Tinsley (Hemiptera: Pseudococcidae), on five host plant species. Animal Biology, DOI 10.1163/15707563-17000080 (NAAS rating: 6.57)

News coverage

खेतीबाड़ी हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में सर्वे में कम मिली सफेद मक्खी

सफेद मक्खी का प्रकोप कम होने से किसानों को राहत

जागरण संग्रहदाता, सिरसा : हरियाणा, पंजाब, राजस्थान में कपास की फसल में सफेद मक्खी का अभी कोई प्रकोप नहीं है। इन प्रदेशों में प्रथम चरण के सर्वे में आर्थिक रूप से कम सफेद मक्खी मिली है। जिससे कपास की फसल को कोई खतरा नहीं है। सिरसा केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय हिसार, कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर व पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के वैज्ञानिकों ने प्रथम चरण का सर्वे किया गया। कपास की हरियाणा में 6 लाख 40 हजार हेक्टेयर, पंजाब में 3 लाख हेक्टेयर व राजस्थान में 2 लाख 30 हजार हेक्टेयर में बिजाई की गई है।

आर्थिक रूप से कम सफेद मक्खी : सफेद मक्खी से निपटने के लिए गठित कमेटी के सदस्य तीनों राज्यों में सर्वे किया गया। कृषि वैज्ञानिकों को सर्वे के दौरान कपास की फसल में आर्थिक रूप से कम मिली। यानि कपास में सफेद मक्खी की संख्या 1 से 3 तक मिली है। जिससे कपास की फसल कोई खतरा नहीं है। कृषि वैज्ञानिक के अनुसार कपास की फसल में सफेद मक्खी कम होने का कारण बारिश भी है।



केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र में लगाई गई नरमा की फसल • जालंधर

पश्चिमी हवा चलने से फसलों को फायदा
मौसम में भी बदलाव हुआ है। पिछले कई दिन से पश्चिमी हवा चलने लगी है। इससे इस बार कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार बंपर फसल होने की उम्मीद है। इससे किसानों को काफी फायदा मिलेगा।

3 लाख 6 हजार हेक्टेयर में सफेद मक्खी से हो गई थी खराब
सफेद मक्खी के कारण वर्ष 2015 में हरियाणा में कपास की फसल को काफी नुकसान हुआ। प्रदेश में 5 लाख 83 हजार हेक्टेयर में बिजाई की कपास की फसल में से 3 लाख 6 हजार हेक्टेयर पर सफेद मक्खी का कहर सामने आया है। पंजाब में 4.50 लाख हेक्टेयर में कपास बोई गई थी, जिसमें से 1.36 लाख हेक्टेयर सफेद मक्खी की चपेट में आई है। हरियाणा में 77 फीसद क्षेत्र में 25 फीसद, 16 फीसद क्षेत्र में 50 फीसद, 5 फीसद में 75 फीसद से ज्यादा कपास को नुकसान हुआ है। जिसके तहत रोहतक में 20 से 25 फीसद, भिवानी में 40, हिसार में 10-15 फीसद, फतेहाबाद में 15-20 और सिरसा में 10 फीसद नुकसान कपास की फसल को हुआ है। सफेद मक्खी के प्रकोप की वजह से प्रति हेक्टेयर 4-5 क्विंटल उत्पादन में कमी आई।

ये है सफेद मक्खी
कपास की फसल में सफेद मक्खी से काफी नुकसान होता है। सफेद मक्खी छोटा सा तेज उड़ने वाला पीले शरीर और सफेद पंख का कीड़ा है। छोटा एवं हल्के होने के कारण ये कीट हवा द्वारा एक दूसरे से स्थान तक आसानी से चले जाते हैं। इसके अंडाकार शिशु पत्तों की निचली सतह पर चिपके रहकर रस चूसते रहते हैं। भूरे रंग के शिशु अवस्था पूरी होने के बाद वहीं पर यह च्यूपा में बदल जाते हैं। ग्रसित पीले पीले व तैलीय दिखाई देते हैं। जिन काली फफूंदी लग जाती है। जो परतों की खाना बनाने की प्रक्रिया कम कर देती है। यह कीड़े न केवल रस चूसकर फसल को नुकसान करते हैं।

कपास की फसल में सफेद मक्खी का पता लगाने के लिए गठित टीम ने सर्वे किया। अभी हरियाणा, पंजाब व राजस्थान में सफेद मक्खी का कहीं पर भी प्रकोप नहीं है। सफेद मक्खी आर्थिक रूप से कम है यानि सर्वे के दौरान पत्ते पर एक से आठ तक संख्या में मिली है। जिससे कपास की फसल को कोई खतरा नहीं है।
डा. दलीप मोंगा, निदेशक, केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र सिरसा



Produced and Published by:

Chief Editor :

Associate Editor, design & Media Support :

Editors:

Dr Vijay N. Waghmare, Director, CICR

Dr. S. M. Wasnik

Dr. M. Sabesh

Dr Dipak Nagrale, Dr H. B. Santosh,

Dr D. Kanjana , Dr. Sain, Dr Rakesh Kumar

& Dr Pooja Verma,

Publication Note: This Newsletter presented online at
http://www.cicr.org.in/cotton_innovate.html

Cotton Innovate is the Open Access CICR Newsletter

The Cotton Innovate – is published weekly by

ICAR-Central Institute for Cotton Research

Post Bag No. 2, Shankar Nagar PO, Nagpur 440010

Phone : 07103-275536; Fax : 07103-275529;

email: cicrnagpur@gmail.com, director.cicr@icar.gov.in

Citation : Cotton Innovate, Issue-3 Volume-8, 2018,
ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur.